ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 15 कुल पृष्ठ-4 6 से 12 अगस्त, 2020 दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 आ. कृ.-08

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना का चुनाव सम्पन्न

प्रो. विट्ठलराव आर्य सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना, सुल्तान बाजार, हैदराबाद का चुनाव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता तथा चुनाव अधिकारी पं. धर्मपाल जी शास्त्री, श्री रामसिंह जी उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, श्री सदाविजय आर्य उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, श्री विरजानन्द जी एडवोकेट अन्तरंग सदस्य सार्वदेशिक सभा एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र आर्य जी की देख–रेख में दिनांक 2 अगस्त, 2020 (रविवार) के दिन पं. नरेन्द्र भवन में सम्पन्न हुआ।

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना का चुनाव इन सबके मार्गदर्शन में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से प्रधान पद पर प्रो. विट्ठलराव आर्य जी तथा मंत्री के पद पर श्री वेंकटरघुरामुलु एडवोकेट निर्वाचित हुए। उपप्रधान पद पर सर्वश्री ठा. लक्ष्मण सिंह जी, श्री हरिशिन वेदालंकार जी, श्री बी. शिवकुमार जी, डॉ. चन्द्रय्या जी, डॉ. वसुधा शास्त्री जी निर्वाचित हुए तथा उपमंत्री पद पर सर्वश्री आर. रामचन्द्र कुमार जी, श्री कृष्ण भगवान जी एवं श्री गोस्वामी गणेशपुरी जी निर्वाचित हुए। श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव जी कोषाध्यक्ष के लिए एवं पुस्तकाध्यक्ष के लिए श्री जे. बसिरेड्डी जी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए। इसी तरह श्री किशन गोपाल गिल्डा, श्री सी.एच. रविकिरण, श्री वेंकट रामिरेड्डी, श्री श्रद्धानन्द अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधि के रूप में सर्वश्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, श्री हरिकिशन वेदालंकार जी, श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव जी, श्री वेंकट रघुरामुलू जी, डॉ. सी.एम. चन्द्रय्या जी, श्री ए. रामचन्दर जी, श्री एम. जयव्रत जी एवं एम. कृष्णभगवान जी निर्वाचित हुए। चुनाव के उपरान्त आधिकारिक तौर पर मुख्य चुनाव अधिकारी स्वामी आर्यवेश जी ने उपरोक्त निर्वाचित अधिकारियों के नामों की घोषणा की। उपस्थित सभी सदस्यों ने करतल ध्वनि से सभी का स्वागत किया। स्वामी आर्यवेश जी ने उपरोक्त प्रतिनिधियों को तथा सभा में उपस्थित सभी सदस्यों से कहा कि निर्वाचित सभी अधिकारी एवं सदस्य आपस में किसी भी प्रकार का मनभेद न रखते हुए सहयोग तथा प्रेम से आगे 3 वर्षों तक के लिए एकजुट होकर आर्य समाज के कार्य को जन–जन तक पहुँचाने का संकल्प लें और कर्मठता से कार्य करें।

ज्ञात हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना की चुनाव प्रक्रिया पिछले पूरे 6 माह से चल रही थी। सार्वदेशिक सभा के नियमानुसार तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना और आर्य समाज के लिए बने संविधान के अनुसार चुनाव प्रक्रिया को पूरी तरह प्रजातांत्रिक तथा पारदर्शी तरीके से चलाया गया था। नियमों की पूरी प्रक्रिया को पूरा अवसर प्रदान करते हुए प्रतिनिधि सभा के चुनाव को सम्पन्न करवाया गया। आर्य जगत् को यह भी विदित कराना हम अनिवार्य समझते हैं कि चुनाव के समय बाकायदा नामांकन दाखिल करने की प्रक्रिया को भी अपनाया गया। नामांकन पत्रों की जाँच के बाद तथा नामांकन पत्रों को वापस लेने के बाद जो भी उम्मीदवार रह गये थे वे सब पदों की बराबर की संख्या में होने से सभी को निर्विरोध व सर्वसम्मति से निर्वाचित घोषित किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान व अन्य चुनाव अधिकारीगणों ने पूरी प्रक्रिया को नियमानुसार सम्पन्न कराकर आर्य जगत में एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपील की कि आर्य जगत में हर प्रान्त की प्रान्तीय सभाएँ व आर्य समाजें संवैधानिक तथा नैतिक नियमों का पालन अपना दायित्व समझकर करें। आर्य समाज को प्रजातन्त्र का एक अनोखा उदाहरण पेश करने की उन्होंने अपील की।

श्रावणी उपाकर्म पर्व एवं आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस

दूसरे दिन सोमवार दिनांक 3 अगस्त, 2020 को प्रातः 9 से 2 बजे तक हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस

शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

योगेश्वर श्रीकृष्ण का वैदिक स्वरूप

– स्वामी आर्यवेश

सारे विश्व में अनेक महापुरुष हुए हैं। भविष्य में भी होते रहेंगे। सभी महापुरुषों में कुछ न कुछ अपनी विशेषताएँ होती हैं जिसके कारण उन्हें चिरकाल तक स्मरण रखा जाता है। परन्तु ये हम सब भारतवासियों का सौभाग्य है कि भारत में जन्में योगेश्वर श्रीकृष्ण जी वास्तव में अप्रतिम हैं, अनुपम हैं। उनकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती। उनके सम्पूर्ण जीवन में आर्य चरित्र की परिणति दिखाई देती है। आज से लगभग 5 हजार वर्ष पूर्व योगेश्वर श्रीकृष्ण जी महान और अविचल युगप्रणेता के रूप में हमारे समक्ष आये। श्रीकृष्ण के जीवन में सम्पूर्ण आदर्शों की अभिव्यक्ति और परिणति हुई थी। वे प्रबल समाज सुधारक के साथ–साथ प्रतिभा सम्पन्न राजनीतिज्ञ भी थे। वे जहाँ अपने युग के कुशल और सुदक्ष संगठक सिद्ध हुए तो वहीं वे प्रबल संहारक भी थे। जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं जिसमें महामानव के रूप में श्रीकृष्ण जी अपनी सुदक्ष भूमिका न निभा पायें हों। वे भारतीय सभ्यता, संस्कृति, नैतिकता तथा धर्म परायणता के प्रतीक हैं।

एक ओर यदि हम महाभारत का युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व उन्हें कौरवों की राज्यसभा में शांति उपदेशक के रूप में खड़ा पाते हैं तो वहीं दूसरी ओर कुरुक्षेत्र की समरभूमि में वह धनुर्धारी अर्जुन के रथ का सारथी भी बनने में जरा भी संकोच नहीं दिखाते। पाण्डवों को मात्र पांच गाँव दिलाने के लिए भरसक प्रयास करने वाले योगीराज श्रीकृष्ण सुदर्शन चक्र के प्रबल प्रहार से जरासंध और शिशुपाल सरीखे अत्याचारी वीरों का शिरोच्छेदन करने में भी कोई दुर्बलता नहीं दिखाते। जीवन में अभूतपूर्व त्याग, व्यवहार में अनुराग तथा लोकसेवा के आदर्श स्वरूप थे श्रीकृष्ण जी।

योगीराज श्रीकृष्ण जी एक ओर भौतिकवाद के पक्षधर दिखाई देते हैं, वहीं चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य के सूत्रधार के रूप में सामने आते हैं तो दूसरी ओर उनकी यह योजना एक मात्र निर्बलों के परिरक्षण, साधुजनों के संरक्षण तथा वर्णाश्रम धर्म के परिपालन के रूप में उन्हें परम अध्यात्मवादी बना देती है। युद्ध के घोर वातावरण के बीच हम उन्हें सन्ध्या उपासना करते हुए देख सकते हैं। श्रीकृष्ण योगेश्वर हैं। क्योंकि कर्मक्षेत्र में तथा समरांगण में भी संयम और संतुलन को बनाये रखने वाला ही सच्चा योगी होता है। ज्ञान और कर्म, श्रेय और प्रेय, प्रवृत्ति और निवृत्ति का यह समन्वय, भौतिकता और आध्यात्मिकता का योग, नैतिकता और सुनीतिमत्ता तथा ब्रह्मबल तथा क्षात्रबल का सहचर, यही है कृष्ण का जीवन और यही है वैदिक धर्म, भारतीय संस्कृति का सार सर्वस्व।

योगीराज श्रीकृष्ण ने अपनी ज्ञानार्जनी, कार्यकारिणी और लोकरंजनी तीनों प्रकार की प्रवृत्तियों को विकास की चरम सीमा तक पहुँचा दिया था तभी उनके लिए यह सम्भव हो सका कि वह अपने समय के महान राजनीतिज्ञ और समाज व्यवस्थापक के गौरवान्वित पद पर आसीन हों। बाल्यावस्था से लेकर जीवन के अन्तिम क्षण तक श्रीकृष्ण जी उन्नति के पथ पर अग्रसर होते रहे। धर्म के अनुसार लोगों को स्व–कर्त्तव्य पालन हेतु प्रेरित करना, उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य रहा। वे स्वयं धर्म में अनन्य निष्ठा रखने वाले और उसके वास्तविक स्वरूप को जानकर उसका उपदेश देने वाले महान धर्मोपदेशक थे। योगीराज श्रीकृष्ण का चरित्र एवं व्यक्तित्व भूमंडल में अद्वितीय है।

यह अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है कि श्रीकृष्ण जी के उदात्त, सात्विक और उज्ज्वल व्यक्तित्व को भागवत पुराण में अत्यन्त अपमानजनक रूप में दर्शाया गया है। तथाकथित कथावाचक तथा पौरोणिक विद्वान् श्रीकृष्ण जी को कामी, लम्पट, माखन चोर, गोपियों के साथ रासलीला करने वाला तथा उनके वस्त्र हरण करने वाले के रूप में उनके चरित्र का हनन करते हैं। ये अत्यन्त आश्चर्यजनक और एक मात्र उदाहरण है कि अपने आराध्य को बदनाम करने वाले उनके भक्त ही हैं। योगेश्वर श्रीकृष्ण जी के दिव्य और गरिमामयी चरित्र को विकृत और कलंकित करके उनके साथ ऐसी मनगढ़न्त अश्लील लीलाएँ व कथानक जोड़ दिये गये हैं जिन्हें पढ़कर और सुनकर लज्जा से सिर झुक

अगले पृष्ठ पर जारी

पिछले पृष्ठ का शेष

योगेश्वर श्रीकृष्ण का वैदिक स्वरूप

जाता है और विडम्बना यह है कि आज श्रीकृष्ण जी के इसी चरित्र को देश के विभिन्न भागों में, विदेशों में, विभिन्न भाषाओं में प्रदर्शित किया जा रहा है। श्रीकृष्ण चरित्र के प्रसिद्ध लेखक श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी जी ने ठीक ही कहा है कि – ''श्रीकृष्ण जी को हम लोग क्या समझते हैं? यही कि वह बचपन में चोर थे, दूध–दही, मक्खन चुराकर खाया करते थे, युवावस्था में व्यभिचारी थे, प्रौढ़ावस्था में वंचक और शठ थे। उन्होंने धोखा देकर द्रोणादि के प्राण लिये। क्या इसी का नाम भगवत चरित्र है?''

यह बड़ी विडम्बना की बात है कि श्रीकृष्ण जी के जीवन में राधा नाम की स्त्री को जिस घनिष्ठता के साथ दिखाया जाता है उस राधा के सम्बन्ध में भागवत पुराण में भी कहीं कोई चर्चा नहीं है। आश्चर्य है कि फिर ये राधा श्रीकृष्ण जी के साथ कहाँ से आकर जुड़ गई। यह सर्वविदित है कि श्रीकृष्ण जी का विवाह रुक्मणि के साथ हुआ था किन्तु रुक्मणि का कहीं भी उनके साथ धर्मपत्नी के रूप में या और किसी प्रसंग में वर्णन नहीं दिखाया जाता, किन्तु राधा को रासलीलाओं से लेकर हर जगह राधा–कृष्ण, राधा–कृष्ण बोलकर यह दिखाया जाता है कि जैसे राधा उनकी पत्नी है। यह इतिहास का एक अक्षम्य अपराध है, एक असत्य बात को योगेश्वर श्रीकृष्ण जैसे महान युगपुरुष के जीवन में जोड़ दिया गया है। हमें इस षड्यन्त्र को समझने की जरूरत है और राधा का कृष्ण जी से किसी रूप में किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं था और न ही राधा नाम के किसी पात्र का कृष्ण जी के जीवन चरित्र में या भागवत में कहीं भी देखने, सुनने या पढ़ने को मिलता है। इसी प्रकार उनके सम्बन्ध में ऐसी अनेक भ्रान्त धारणाएँ प्रचारित की गई हैं जो लोक में प्रचलित हो चुकी है। जिनसे उनका व्यक्तित्त्व लांछित होता है। विवेकशील लोग निष्पक्ष भाव से उसकी सत्यता को जानने और समझने की कोशिश करें और योगेश्वर श्रीकृष्ण जी महाराज को ऐसी निम्न स्तर की भ्रांतियों से बचाने का कार्य करें।

नव–जागरण के अग्रदूत तथा आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने महाभारत के आधार पर योगीराज श्रीकृष्ण जी का सच्चा स्वरूप विश्व के सामने प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि योगेश्वर श्रीकृष्ण सर्वथा निष्पाप थे। महर्षि दयानन्द जी ने घोषणा करते हुए कहा कि – ''देखो श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अतिउत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश हैं जिसने कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मृत्यु–पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा है और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं।''

योगीराज श्रीकृष्ण जी के इस उदात्त आदर्श रूप को हमने भुला दिया। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय उस विश्वबंद्य महापुरुष ने गुरुजनों के चरण प्रच्छालन का विनम्र कार्य अपने जिम्मे लिया तो उस यज्ञ की प्रथम पूजा के अधिकारी भी वे ही बनें। उस समय श्रीकृष्ण की अग्रपूजा का प्रस्ताव करते हुए भीष्म ने उन्हें अपने युग का वेद–वेदांगों का उत्कृष्ट ज्ञाता अतीव बलशाली तथा मनुष्य लोक में अति विशिष्ट बताया था। भीष्म के शब्दों में वे दानशीलता, शिष्टता, शास्त्र ज्ञान, वीरता, कीर्तिमत्ता तथा बुद्धिशीलता में श्रेष्ठ हैं। इसी कारण श्रीकृष्ण हमारे सम्मान के पात्र हैं। श्रीकृष्ण के इस निष्पाप, निष्कलुष तथा आदर्श चरित्र की ओर पुनः देशवासियों का ध्यान आकृष्ट करने का श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को है। आज आवश्यकता इस बात की है कि श्रीकृष्ण जी के वैदिक स्वरूप को आम जनता तक पहुँचाया जाये तथा उनके आदर्शों को जीवन में धारण किया जाये। कहा गया है कि ''यो यथा चिन्तयति तथा भवति।'' जो जैसा चिन्तन करता है वह वैसा ही हो जाता है। इसलिए आज आवश्यकता है कि योगीराज श्रीकृष्ण के आदर्श चरित्र व व्यक्तित्व पर गम्भीर चिन्तन व मनन किया जाये और महाभारत के कृष्ण के वास्तविक तथा सच्चे जीवन चरित्र को जन–जन तक प्रचारित किया जाये जिससे हम सब सच्चे अर्थों में योगीराज श्रीकृष्ण के आदर्शों को सम्मुख रखकर अपना तथा समाज का सर्वहित कर सकें।

''नीम एक–गुण अनेक''

मच्छरों की मार से सारी दुनिया परेशान है यहां तक कि बड़े-बड़े योद्धाओं को भी यदि मच्छर काट ले तो वे भी असहाय और निर्बल प्राणियों की श्रेणी में अपने आपको खड़ा पाते हैं। मच्छरों से मुकाबला करने के लिए दूसरी तरफ लोगों की जेबे लूटने वाली व्यापारिक कम्पनियों ने रसायनों से बनी अगरबत्तियां, बिजली के कई उपकरण जैसे गुड नाईट आदि तथा त्वचा पर लगाने वाली क्रीम, जैसे ओडोमॉस आदि का निर्माण करके जनता की जेबों से व्यापार करना शुरू कर दिया। इन उपायों से कुछ हद तक मच्छरों का इलाज बेशक होता हो परन्तु इनका मानवीय शरीर पर भी बड़ा भारी कुप्रभाव पड़ता है। मच्छरों से लड़ने के लिए नीम का तेल एक विशुद्ध प्राचीन भारत की औषधि है। नीम के पत्तों को चबाकर खाना या नीम के तेल की रात को सोते समय हाथों पैरों पर मालिश तथा मुंह पर भी पांच दस बार हाथ फेरना प्रमुख एवं कारगर उपाय है, जिससे केवल मच्छर ही नहीं भागेंगे अपितु वायरल जैसे बुखारों की बीमारियां तथा ब्लड शुगर आदि की अधिकता से भी सारी उम्र के लिए छुटकारा मिल जायेगा।

नीम के तेल के घरेलू उपयोग

1. सुन्न शरीर में प्राण फूंकने की नीम में पर्याप्त क्षमता है। तेल की शरीर के सुन्न अंग पर मालिश करने से डेढ़ दो सप्ताह में ही रक्त संचार सुचारू हो जायेगा।
2. आग से जले पर नीम का तेल बड़ा लाभदायक है। घाव हो जाने पर आधा भाग मोम मिलाकर मल्हम बनाकर घाव पर लगाने से घाव जल्दी भरता है।
3. दाद, खाज व खुजली में नीम के तेल का उपयोग लाभदायक है। बवासीर में गुदा पर लगाने से आराम मिलता है।
4. नीम के तेल में शहद मिलाकर रूई की बत्ती कान में फेरने से कान बहना बन्द हो जाता है तथा दुर्गन्ध भी नहीं रहती।
5. नीम का तेल नियमित रूप से सिर में लगाने से गंजापन दूर होता है तथा बाल झड़ने बन्द हो जाते हैं। इस प्रयोग में शीतल जल से सिर धोना चाहिए।
6. गठिया हो जाने पर नीम तेल की पीड़ित स्थान पर मालिश करें।

7. चेचक रोग में नीम का तेल लगाने से दाग नहीं रहते।
8. जुएं व लीक हो जाने पर नीम का तेल लगावें, नष्ट हो जायेंगी।
9. कुष्ठ रोग व सफेद दाग में नीम का तेल रोग ग्रस्त स्थान पर लगावें। त्वचा रोग दूर हो जायेगा।
10. नासूर में 100 ग्राम नीम तेल में 10 ग्राम मोम व 10 ग्राम बीरोजा मिला कर मल्हम बनाकर दोनों समय लगावें।
11. हड्डियों का अल्सर नीम तेल लगाने से ठीक होता है।
12. गिरने से भीतरी चोट व मोच के कारण सूजन आ गई हो तो नीम तेल चुपड़कर गर्म सिकाई करें।
13. दुधारू पशुओं को लगाने से उनके थनों पर चिचड़े आदि कृमियों से रक्षा होती है।
14. बालों का झड़ना व अन्य बालों के रोग शुद्ध भृंगराज तेल में 30 प्रतिशत नीम तेल मिलाकर लगाने से सिर में होने वाली अनेक व्याधियों को दूर करता ही है तथा बालों का झड़ना, असमय सफेद होना रोकता है तथा झड़े हुए बाल तो पुनः आते ही हैं, सफेद बाल भी काले हो जाते हैं। नेत्र ज्योति तेज हो जाती है।
15. दांत में खून आने व पायरीया में नीम तेल दांतों पर अंगुली से लगावें बाद में दंत मंजन से मुंह साफ करने से खूनी पायरीया व दांत दर्द में आराम मिलता है।
16. बर्र एवं मधुमक्खी के काटने पर नीम तेल लगावें जलन नहीं रहेंगी।

स्वतन्त्रता दिवस पर विशेष

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का 80 प्रतिशत योगदान

– आचार्य डॉ. उमेश यादव, मिनिस्टर ऑफ रेलिजन
आर्य समाज वेस्टमिड्लैंड (बर्मिंघम) यू. के.

लगभग ६०० वर्ष मुगल राज व २०० वर्ष ब्रिटिश राज के शिकंजों में जकड़ी भारत माता की पीड़ा को कनखल हरिद्वार रहते हुये स्वामी पूर्णानन्द ही ने अपने जीवन काल में ही अनुभव कर लिया था तभी १८५५ में जब स्वामी दयानन्द उनसे मिले तो अपनी हृदय की राष्ट्रीय व्यथा जिज्ञासु दयानन्द के सामने रखते हुये उनके अन्दर भी स्वदेश की भावना प्रबल कर दी पर अपनी वृद्ध–अवस्था के कारण दयानन्द को अपने शिष्य मथुरा में रहते हुए दंडी विरजानन्द के पास जाने को कहा और पहले वैदिक व्याकरण को अच्छी तरह जान कर ही वेद–ज्ञान को सम्यक समझा जा सकता है जिससे अपने आर्यावर्त की मौलिक रक्षा सम्भव है, ऐसा उपदेश दिया। दयानन्द के अन्दर विदेशी राज्य के प्रति विरोध की अग्नि भड़कने लगी और सीधा गुरु विरजानन्द के पास न जाकर मराठी नेता नाना साहब पेशवा आदि से मिले, साधु संन्यासी तपस्वियों के अन्दर राष्ट्रीय चेतना जगाकर ब्रिटिश राज्य के विरोध के लिये संगठन बनाने की कोशिश की। बैराकपुर सैन्यावास (बंगाल) में भी गये जहाँ बंगाल के प्रथम क्रांतिकारी मंगल पांडे नामक सैनिक ने स्वामी दयानन्द से आशीर्वाद माँगा और स्वाधीनता के लिये मर मिटने का संकल्प लिया। पर तत्कालीन प्रयास विफल होता हुआ इन्हें महसुस हुआ क्योंकि स्वामी दयानन्द ने समझा कि भारतीय लोग जब तक वैदिक सिद्धान्त व मर्यादा को शुद्धरुप से नहीं समझेंगे तब तक इनमें अपने राष्ट्र के लिये जी–जान से मर–मिटने की भावना जागृत नहीं हो पायेगी। अज्ञानतावश भारत की जनता स्वार्थ आदि दोषों के शिकार हो अंग्रेजों से लड़ने की ताकत नहीं जुटा पा रही थी, ऐसी स्थिति में स्वयं दयानन्द भी शुद्ध वैदिक सिद्धान्तों की गहराई से अपरिचित थे फलतरू १८६० में उन्हें स्वामी पूर्णानन्द जी की बात को सच समझ कर मथुरा निवासी व्याकरण के सूर्य प्रज्ञाचक्षु दंडी विरजानन्द के पास आकर विधिवत् अध्ययन करने की प्रवृत्ति हुई। केवल २.५ वर्ष की अवधि में दयानन्द उस योग्य बन गये कि वे वेदों का भाष्य स्वयं कर सकें और संसार के कल्याणार्थ शुद्ध वेदों व वैदिक ग्रंथों के प्रचार–प्रसार का दीक्षान्त लेकर दृढ़ संकल्प के साथ जगोपकार में लगकर सर्वत्र अज्ञानता, गुलामी, चाटुरता, स्वार्थ आदि दोषों में फंसे भारतीयों को स्वाधीनता का पाठ पढ़ाया और स्वदेश, स्वभाषा, स्वदेशी वस्तु, स्वसंस्कृति व स्वसभ्यता की शुद्ध गरिमा से अवगत कराने में जुड़ गये। १८५७ के संग्राम का शंखनाद महर्षि दयानन्द ने अपनी वाणी और व्यवहारों से ही नहीं अपितु अपने ग्रंथों में भी सर्वत्र फूँक दिया –

भारत में विदेशी राज्य के विरोध में भभकती आग को देखकर जब ब्रिटेन की रानी यह कहने लगी कि वह भारतीयों को अपनी संतान की तरह रखेगी तब महर्षि दयानन्द ने अपनी कालजयी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के ८ वें समुल्लास में यह लिखकर भारतीय वीरों के खून को गरम कर दिया–

"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है, अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर माता–पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।"

भारत की दुर्दशा पर दुःखी हृदय से आँसू बहाते हुये ऋषिवर लिखते हैं– "विदेशियों के आर्यावर्त में राजा होने के कारण बाल्यावस्था में अस्वयम्बर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषण आदि कुलक्षण, वेद विद्या का अप्रचारादि कर्म है, जब आपस में भाई–भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।" स.प्र. १०वां समु.

ब्रह्म समाज के लोग अंग्रेजों की चाटुकारिता करते थे, उन्हें अपने राष्ट्र के हक में स्वाधीनता हेतु अंग्रेजों के सामने बोलने में दम फूलता था तब उनकी समालोचना में महर्षि दयानन्द के ये वाक्य अत्यन्त स्वदेश की शिक्षा हेतु सबके लिये प्रभावी सिद्ध हुये।

"देखो? अपने देश के बने हुये जूतों को ऑफिस और कचहरी में जाने देते हैं, इस देशी जूते को नहीं, इतने में ही समझ लो कि अपने देश के बने हुये जूतों का भी (वे) कितना मान प्रतिष्ठा करते हैं? उतना भी अन्य देशस्थ मनुष्यों का नहीं करते।" स. प्र. समु. ११

इसी प्रसंग में महर्षि ने लिखा कि "ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा ये (ब्रह्म समाजी) भरपेट करते हैं, ब्रह्मादि महर्षियों का नाम भी नहीं लेते, ब्रह्मा से लेकर आर्यावर्त्त में बहुत से विद्वान् हो गये हैं, उनकी प्रशंसा न करके यूरोपियन की स्तुति में उतर पड़ना पक्षपात और खुशामद के अलावा क्या कहा जाये।" स. प्र. समु. ११

अपनी पुस्तक आर्याभिविनय में एक मंत्र की व्याख्या राष्ट्र प्रेम परक होने से उसके भाव में ऋषिवर का स्वदेश के लिये यह उद्गार राष्ट्रप्रेमियों के अन्दर महौषधि के रुप में कारगर है–

" हे महाधनेश्वर! हमारे शत्रुओं के बल पराक्रम को (आप) सर्वथा नष्ट करें, आपकी करुणा से हमारा राज्य और धन सदा वृद्धि को प्राप्त हो। आर्याभि. १.४३

राष्ट्रीय स्नेह की भावना के प्रबल अग्रदूत महर्षि दयानन्द थे। उनके इस प्रसंग से आप स्वयं उनकी स्वदेश भावना का अन्दाजा लगा सकते हैं–

१६ दिसम्बर १८७२ से मार्च १८७३ तक महर्षि कलकत्ता में राजा ज्योतीन्द्र मोहन टैगोर के प्रमोद कानन में वेद प्रचार के दौरान ठहरे । वहाँ वायसराय लॉर्ड नॉर्थ ब्रुक उन्हें मिले और प्रार्थना की कि हमारे राज्य में सुख और न्याय है जहाँ आप बिना रोक टोक अपना प्रचार करते हैं अतः आप हमारे राज्य की यहाँ पर चिरस्थिरता के लिये ईश्वर से प्रार्थना कर दिया करें, तो इस पर महर्षि ने जो उत्तर दिया वह उनकी स्वदेश के प्रति सीमातीत प्रीति का परिचायक है। बिना कोई हिचक भारत के तथाकथित भाग्यविधाता, तथा भारत में स्थित ब्रिटिश सत्ता के सर्वेसर्वा उस वायसराय को अत्यन्त स्वाभिमान के साथ बोला– " राजन् ? मैं तो प्रति दिन प्रातः उठकर अपने परमपिता परमेश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि शीघ्रतातिशीघ्र यह राज्य भारत से उठ जाये, मैं तो शीघ्र ही वह दिन देखना चाहता हूँ जब कि भारत का शासन सूत्र हम भारतीयों के हाथ में हो।"

ऋषि के उपरोक्त उत्तर से वायसराय चकित रह गया और इंडिया ऑफिस को भेजे गये अपने दस्तावेजों में उसने नोट लिख दिया कि इस विद्रोही फकीर पर कड़ी नजर रखी जाये। –दैनिक वीर अर्जुन दिल्ली ६.४.६१ लेख श्रीयुत् दीवान अलखधारी।

इस तरह महर्षि दयानन्द के अन्दर स्वदेश की अग्नि के प्रकाश से भारतवर्ष के अनेक राजस्थानी महाराणा सज्जन सिंह आदि राजाओं में स्वदेश के प्रति मन्द अग्नि फिर से सुलग गयी । इन्दौर नरेश शियाजी राव, कर्नल महाराजा प्रताप सिंह जोधपुर

अगले पृष्ठ पर जारी

आर्य समाज के बने प्रधान, बरौदा नरेश गायकवाड, कपूरथला नरेश, उदयपुर नरेश राजा फतह सिंह जो सज्जन सिंह के बाद उत्तराधिकारी बने, राजस्थानी केशर सिंह बारहट परिवार , मथुरा वृन्दावन नरेश महेन्द्र प्रताप सिंह आदि तमाम भारतीय राजाओं को महर्षि का यह राष्ट्र प्रेम जिन्दा दिल बना गया।

इंडियन नेशनल कॉग्रेस की स्थापना १८८५ में अंग्रेजी ऑफिसर द्वारा की गयी, यद्यपि वह अंग्रेजों की सोची समझी चाल थी कि इससे इंडियन को बाँध कर रखेंगे पर कुछ स्वदेश प्रेमी महर्षि दयानन्द के शिष्य उसमें शामिल हुये यह सोचकर कि हम इसे अपने नियन्त्रण में लेकर अपनी राष्ट्रीय भावों और सिद्धान्तों के अनुसार राजनीति को आगे बढ़ा पायेंगे जिसमें शुरु में मराठी नेता जस्टिस महादेव गोविन्द राणाडे, उनके शिष्य गोपाल कृष्ण गोखले और गोखले के शिष्य बने म. गांधी।

स्वामी श्रद्धानन्द के साथ गांधी मिले तो ८ अप्रैल १९१५ को ज्वालापुर आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव में स्वामी श्रद्धानन्द ने मि. गांधी को "महात्मा गांधी" की उपाधि से सम्मानित किया पर कालान्तर में महात्मा गांधी ने आर्य समाज से दूरी बना ली, यद्यपि म. गांधी के गुरुकुल काँगड़ी आने पर स्वामी श्रद्धानन्द ने उनकी राष्ट्रीय भावना को और कूट–कूट कर मजबूत बनाया था। पर जो भी हो, आर्य समाज स्वाधीनता की लड़ाई में कभी पीछे नहीं हटा। बाल गंगाधर तिलक, विपिन पाल और लाला लाजपत राय ने तो पंजाब, बंगाल व पूरे भारत में स्वाधीनता संग्राम को नयी चेतना भर दी। पंजाब के सरदार अजीत सिंह का बलिदान अत्यन्त महत्त्व पूर्ण है।

इन सबसे प्रेरित श्यामजी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर, लाला हरदयाल, देवतास्वरुप भाई परमानन्द , मदनलाल ढींगरा आदि गरम दल के नेताओं के गर्म खून ने समग्र व सशस्त्र क्रांति को जन्म दिया। कोई इस भ्रम में न रहे कि भारत को आजादी गांधी की अहिंसावादी नीतियों से बिना ढाल व तलवार से ही मिल गयी। सरदार भगत सिंह (पौत्र स. अजीत सिंह–पूर्ण आर्य समाजी परिवार–राष्ट्रसमर्पित), राजगुरु और सुखदेव की एक साथ फाँसी, उत्तर प्रदेश के रामप्रसाद विस्मिल , चन्द्र शेखर आजाद आदि आर्य क्रांतिकारी नेताओं का अमर बलिदान सब भारतीय स्वतंत्रता के मूल आधार है जिनमें महर्षि दयानन्द की दी हुई राष्ट्रीय प्रेरणा व सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षा ही उनके उत्साह को हर पल बढ़ा रही थी। अनेक प्रमाणों के आधार पर हम कह सकते हैं आजादी की सम्पूर्ण क्रांति में आर्य समाज का लगभग ७०–८० प्रतिशत योगदान सम्मिलित था जिसकी पहचान आज की सरकार भी करे। ठोस प्रमाण के लिये निम्न प्रकरण पढ़ें–

८० प्रतिशत की सहभागिता– यह निर्विवाद है कि स्वाधीनता संग्राम में आर्य समाज की सहभागिता लगभग ८० प्रतिशत थी। निम्न प्रमाणयुक्त विवरणों से यह पूर्णतया स्पष्ट हो जायेगा।

उत्तर प्रदेश सभा का इतिहास – आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का इतिहास–श्री शिवदयालु जी पृ. ३०–१२५ तक विस्तार ज्ञान के लिये पठनयोग्य है।

१. " स्वाधीनता के विगत संग्रामों में मेरठ जिला, उत्तर प्रदेश में सबसे आगे रहा। जिले के अन्दर दो हजार से ऊपर सत्याग्रहियों को कारावास की यातना सहन करनी पड़ी है। इन दो हजार में से अधिकतर (लगभग ८० प्रतिशत) आर्य समाजी थे। "

२. " देश की स्वाधीनता के संग्राम में बुलन्दशहर ने बढ़कर बलिदानों का ताता लगाया। इस जिले के कई सौ आर्य समाजियों ने कारागारों की यातनायें सही। "

३. सन् १९२१ में स्वराज्य आन्दोलन में आर्य समाज के (सोरो जिला मथुरा) के अनेक सदस्यों ने प्रशंसनीय कार्य किया।

४. सन् १९२१ के स्वाधीनता संग्राम में जिला सुल्तानपुर के अनेकों आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने प्रशंसनीय त्याग व बलिदान किये।

५. आर्य समाज के इतिहास भाग २ पृ. १११ के अनुसार उस भीषण काल में जब सब सत्याग्रही जेलों में दारुण दुःख झेल रहे थे तब कॉग्रेस के बरिष्ठ नेता मोती लाल नेहरू की नियुक्ति अखिल भारतीय कॉग्रेस कमेटी की ओर से की गयी थी कि वे जेलों में गहन कष्ट झेल रहे वीरों की जाँच करें । उन्होंने जो रिपोर्ट दिया वह यह था – " आज महात्मा गांधी के आदेशानुसार स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये जेल के सीखंचों में बन्द बैठे जो सत्याग्रही कष्ट सह रहे हैं, उनमें लगभग ७० प्रतिशत आर्य समाज की विचार धारा रखने वाले हैं । साथ ही जिन वकीलों ने अदालतों का बहिष्कार किया उनमें भी अधिक संख्या आर्य समाजियों की थी। " यद्यपि आर्य समाज और गांधी जी के विचारों में भेद आ गया था तथापि आर्य समाज के लोगों ने अंतिम समय तक पूरी निष्ठा से इस आन्दोलन में साथ निभाया बल्कि सबसे आगे बढ़कर इसमें महत्त्वपूर्ण भाग लिया।

६. डॉ. पट्टाभिसीतारमैया द्वारा लिखित पुस्तक "कॉग्रेस का इतिहास" भाग–१–२–३ में उन्होंने स्वयं की जाँच का विवरण विस्तारपूर्वक दिया है जिसमें सार अंश यहाँ उपस्थित किया जाता है– " उस समय इस आन्दोलन की सहानुभूति तथा पक्ष में जिन वकीलों ने अदालतों का वहिष्कार किया था उनमें भी ८० प्रतिशत लोग आर्य समाजी विचार धारा के थे।" यह प्रसंग १९२१ के असहयोग आन्दोलन का है। यहाँ शब्दों पर ध्यान दीजिये। ऊपर के वाक्य में डा. रमैया " उनमें भी" का प्रयोग किया अर्थात् जेल में जाने वाले लोग तो ८० प्रतिशत थे ही, सरकारी अदालतों का बहिष्कार करने वाले वकीलों में भी ८० प्रतिशत आर्य समाजी विचार धारा के थे। यह प्रसंग स्वामी श्रद्धानन्द –प्रकरण में भी पूर्व ही उपस्थित किया गया है। यहाँ केवल प्रमाण–बहुलता के लिये दिग्दर्शित है। दुःख है कि स्वतंत्र भारत में भी आर्य समाज के इन बलिदानी वीरों की चर्चा सरकार के संज्ञान में न के बराबर है जिसकी आज महती आवश्यकता है । आगे भी देखें– यू.पी. सभा के इतिहास के अनुसार–

अलगू राय शास्त्री– अलगू राय शास्त्री उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व राज मंत्री रहे। आर्य समाज आपके रग–रग में वसा हुआ था। लोक सेवा संघ के आजीवन सदस्य थे। आपने गुरुकुल डौरली उ.प्र. की स्थापना में निष्ठापूर्वक कार्य किया व सहयोग रखा। मेरठ आश्रम के संचालक बनकर जनता की सेवा की। ब्रिटिश सरकार के जेलों में आप अनेक वार अनेक आन्दोलनों के कारण आरोपित होने के कारण गये और यातनायें सही । सन् १९४२ में भारत से बाहर जाने लगे तो प्रांत की सीमा पर आपको पकड़ लिया गया और एक खतरनाक क्रांतिकारी और संगठन कर्ता बताकर आपको गृहसचिव बैरेन ने कारावास में रखा। पृ. १८२

चौ. चरण सिंह– भारत की राजनीति में चौधरी चरण सिंह का आर्य समाजी और राष्ट्र भक्त होने का अपना ही महत्त्व है। चाहे उनका आना जाना सब मत–मतान्तर के लोगों के वीच हुआ करता पर उन्होंने आर्य समाज की मर्यादा कभी नहीं तोड़ी। अनेक साथियों से सुना कि आपने कभी मजार पर चादरें नहीं चढ़ायी, चर्च में मोमबत्ती नहीं जलायी इत्यादि पर फिर भी सब मतों को मानने वालों में भी सम्मानित रहे। आज कल तो देखा जाता है कि अपने थोड़े से राजनैतिक स्वार्थ के लिये अपने सिद्धान्तों के मेढ़ तोड़ देते हैं, पर चौ. चरण सिंह एक पक्के आर्य सिद्धान्तों के सिपाही माने जाते थे। उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री बने तथा एक बार भारत के प्रधान मंत्री भी। तथापि आर्य समाज की दृष्टि से उनका स्थान महत्त्व पूर्ण रहा। सुना जाता है कि वे सदैव प्रधान मंत्री या मुख्य मंत्री या किसी भी पद पर रहे, वे महर्षि दयानन्द की तस्वीर अपने टेबल पर रखा करते थे। सच में वे किसान–पुत्र किसानप्रिय, आर्य पुत्र व आर्य प्रिय नेता भारतवर्ष को आर्य समाज की देन थे। मेरठ जिला उ.प्र. के स्वतंत्रता–आन्दोलनों व अनेक कार्यक्रमों में आपका विशेष हाथ रहा। अनेक बार ब्रिटिश जेलों में आप भी राजनैतिक संगठनों के कारण ही गये और अनेक कष्ट सहे। गुरुकुल डौरली के वर्षों प्रधान रहे, आर्य कुमार महासम्मेलन की अध्यक्षता की तथा भारतीय आर्य कुमार परिषद् के आप प्रधान भी रहे। राजनीति में सफलता, त्याग व स्वदेश प्रेम आपकी सब उपलब्धियों का प्रेरणास्रोत आर्य समाज ही था ऐसा आपका मानना है। खादी वस्त्र, खादी टोपी कुर्ता–धोती सब स्वदेशी प्रेरणा ही थी जिसका आपने पालन किया। स्वदेशी वस्तु–प्रयोग व राष्ट्र–प्रेम की शिक्षा आपने महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश से सीखी थी। यही तो आर्य समाज का गौरव है मुँहबोलती तस्वीर है। अन्यत्र भी हम इनके बारे में सम्बन्धित प्रकरणों में जानेंगे। पृ.१५७

श्री चन्द्रभानु गुप्त– देश भक्त व आर्य वीरों की श्रेणी में आपका नाम गौरव से लिया जाता रहा । आप भी उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री रहे। वचपन से ही आर्य समाजी थे । आर्य कुमार सभा, लखीमपुर के आप मंत्री हुआ करते थे। गणेश गंज (लखनऊ) के आर्य कुमार सभा के कर्मठ कार्य कर्त्ता रहे। १९६६ में आपके प्रयास से एक आर्य कुमार महासम्मेलन अत्यन्त सफल हुआ अनेक तरह से स्वाधीनता संग्राम में आपने सक्रिय भाग लिया, ब्रिटिश सरकार के जेलों में यातनायें सही। आर्य समाजी मनोबल से ही आप सर्वत्र सफल रहे। पृ. १९३–९४

श्री गोविन्द बल्लभ पंत– आप का नाम आर्य समाज के प्रखर कार्यकर्ताओं में आता है। आर्य समाज की प्रेरणा ही अपको राजनीति में कूदने का कारण बनी। आप भारत के गृह–मंत्री भी रहे। अत्यन्त गौरव पूर्वक आपका राजनैतिक काल रहा। आर्य समाज नैनीताल के साथ वचपन से ही आपका सम्बन्ध था। उस आर्य समाज द्वारा स्थापित पहली पुत्री–पाठशाला के आप विशेष कार्यकर्ता थे। यह पाठशाला नैनीताल में पहली आर्य पुत्री पाठशाला के रुप में आर्य समाज नैनीताल द्वारा स्थापित हुई जिसके संरक्षक स्व. श्री गोविन्द बल्ल्भ पंत जी थे। पृ. ६

पं. लाल बहादुर शास्त्री– 'जय जवान, जय किसान" के सबल नारा देने वाले भारत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री स्व. श्री लाल बहादुर शास्त्री की राजनैतिक गरिमाओं से भला कौन अपरिचित है। आप भी भारत को आर्य समाज की ही अनुपम देन थे। वचपन से आर्य समाजी होने के कारण आगे बढ़ते गये और आर्य समाज की प्रेरणा से राजनैतिक जीवन में स्वदेश सेवा के लिये आये। आर्य समाज

अगले पृष्ठ पर जारी

की ओर से चलायी जा रही शुद्धि के कार्यों में आप कार्य करते हुए आगे बढ़े तथा पंजाब केसरी लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित लोक सेवा संघ के आजीवन सदस्य बन गये और लाला जी के निर्देशानुसार राजनीति में आगे बढ़ते रहे। सादगी के अपूर्व प्रतीक , स्वदेशी वस्तु, भाषा, सभ्यता व वैदिक भारतीय संस्कृति के तो वे द्योतक थे। आगे भी जानेंगे इनके वारे में। –वे क्रांति के दिन–पृ. ४५ से उद्धृत– लेखक श्री महावीर त्यागी, उसी क्रम में आगे–

श्री जयानन्द भारती– गढ़वाल आर्य समाज से प्रभावित होकर श्री जयानन्द भारती स्वदेश के लिये स्वाधीनता की लड़ाई में आ गये। आर्य समाज की ऐसी प्रेरणा मिली कि ब्रिटिश नौकर शाही उन्हें बर्दास्त न हुई फलतः इस ताना शाही के विरुद्ध आवाज उठाने लगे और इस संघर्ष में अनेक बार जेल गये। गढ़वाल में अछूतों की डोला–पालकी समस्या थी। सबको डोला–पालकी वर–बधू के लिये मिलता था पर अछूतों के लिये रोक था। आपने इसका विरोध कसकर किया और संघर्ष किया ताकि इस दिशा में अछूतों को न्याय व प्रतिष्ठा मिले। इस कारण भारती जी गरीबों तथा अछूत समझी जाने वाली जतियों के बीच देवतुल्य पूजनीय माने जाते थे। इसकी चर्चा श्री महावीर त्यागी जी ने अपनी पुस्तक " वे क्रांति के दिन में विस्तार से किया। इसी पुस्तक में श्री त्यागी जी ने अपने बारे में भी काफी जानकारियाँ दी। आगे देखें–

श्री महावीर त्यागी–

भूतपूर्व भारत के प्रतिरक्षा व पुनर्वास मंत्री बनने वाले की धार्मिक जड़ आर्य समाज था। उन्होंने स्वयं लिखा– " मैं वचपन से ही आर्य समाजी था । घर पर यज्ञोपवीत और धोती दो ही कपड़े पहनता था, आम तौर से गर्मियों में ।" पृ. ४५

७. ८० प्रतिशत आर्य समाज की सहभागिता की पुष्टि– १९६४ सन् में दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा के दिवाली के अवसर पर महर्षि दयानन्द–निर्वाणोत्सव में श्री त्यागी जी को पुनर्वास मंत्री के रूप में और श्री राजा दिनेश सिंह को विदेश मंत्री के रूप में आमन्त्रित किया गया। दोनों ने अपने अंदाज में महर्षि दयानन्द को श्रद्धाँजलि दी। त्यागी जी ने अपने बारे में जो कहा वह ऐसा है– " मैंने वचपन से ही आर्य समाज की शिक्षा से उत्साह पाया था और उसी से प्रेरित हो कॉग्रेस में शामिल हुआ। खिलाफत आन्दोलन के समय आगरा में ८२ प्रतिशत पुरुष और ९२ प्रतिशत स्त्रियाँ आर्य समाजी थीं। महर्षि ने "स्वराज्य " का बीज बोया।" दैनिक हिन्दुस्तान– ५.११.६४ पृ. ३

इसी तरह सत्याग्रह में भाग लेकर आर्य समाजी जो जेल गये, स्वतंत्रता सेनानी बने उनके कुछ और भी ऐसे नाम आये– श्रीमती शोभावती देवी, श्रीमती अम्बा देवी जी हल्द्वानी व समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री शादी राम जी ने स्वाधीनता संग्राम में बढ़–चढ़कर काम किया।

पं. शिव दयालु जी, हापुड़– १९३१ में आपकी अध्यक्षता में विराट तहसील स्तर पर राजनैतिक सम्मेलन हुआ और वहीं नमक सत्याग्रह का श्री गणेश किया गया। इसमें आर्य समाज हापुड़ के आर्य समाजियों का विशेष हाथ रहा था। पृ.३७– म. त्यागी जी.

वैद्य पं. शेर सिंह– आप भी स्वाधीनता की विभिन्न लड़ाइयों में जेल गये। आपने स्वयं फरमाया– स्वराज्य के आन्दोलन में इसी प्रकार हजारों व्यक्ति आर्य समाज को छोड़कर कॉग्रेस में मिल गये और आर्य समाज को भूल कर (आर्य समाज की जिम्मेवारियों के पदों से हटकर) उसी मशीन के पूर्जे बन गये। वैद्य पं. शेर सिंह फरमाते हैं कि जिस जेल में मै था उसी में गणना की गयी तो उसमें ८० प्रतिशत आर्य समाजी थे। लगभग यही हाल दूसरी जेलों का भी था। भारतीय लोक समिति के प्रथम अधिवेशन दिल्ली के अध्यक्ष पद से श्री पं. राम चन्द्र देहलवी का भाषण –पृ. ५. पं. राम चन्द्र देहलवी एक क्रांतिकारी, शास्त्रार्थ महारथी, आर्य समाज के प्रखर वक्ता और उच्चकोटि के विद्वान थे। आपने भी अनेक स्थानों पर स्वाधीनता आन्दोलनों में भाग लिया और जेल गये।

८. १९३१ में महात्मा गांधी के आह्वान पर असहयोग आन्दोलन सत्याग्रह के बाद "नमक कानून तोड़" सत्याग्रह घटित हुआ । लगभग १८७३–७४ में ही महर्षि दयानन्द ने अपनी वाणी व पुस्तकों के माध्यम से इसका बीज तो बो ही दिया था जिसके कारण आर्य समाज के नेताओं व कार्यकर्ताओं ने इस आन्दोलन को भी आगे बढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी । पंजाब में उन दिनों स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी महाराज मानो लौहपुरुष के रुप में सरकार की सब क्रियाकलापों को खूफिया की तरह देखते हुये असहयोग आन्दोलन व फिर इस आन्दोलन का बागडोर मजबूती से सम्भाला हुआ था । उनकी प्रेरणा से आर्य नर–नारियों में उत्साह बराबर बना हुआ था और इसमें भी बताया गया कि आर्य समाज के लोग लगभग ५० हजार की संख्या में जेल गये। यू.पी. सभा का इतिहास पृ.७२ से पता चलता है कि पूरे सत्याग्रही जेलों में अगर २ लाख थे तो ५० हजार तो केवल आर्य समाजी स्त्री–पुरुष थे। पाठक वृन्द समझ सकते हैं कि सब मत–मतान्तर के लोग मिला कर डेढ़ लाख तो आर्य समाजी अकेले ५० हजार तो निर्विवाद थे।

मेरठ आर्य स्त्री समाज की सदस्या श्रीमती रामकली देवी अपने तीन मास के नन्हें बच्चे को लेकर एक कपड़े की दुकान पर सन् १९३० में धरना दिया कि पता चले कि कौन सा चतुर दिमाग इस आन्दोलन को खुफिया तरीके से सफल कर रहा है पर अन्त तक उसे पता न चल सका कि इस सत्याग्रह के जत्थेदारों की कड़ी कौन जोड़ रहा है। यह स्वामी स्वतंत्रता नन्द ही थे जो आर्य समाज के एक प्रसिद्ध प्रचारक, दार्शनिक व वेदज्ञ थे। एक लाहौर की सम्पन्न सभा में स्वामी जी ने बेझिझक सरकार को अपने सम्बोधन में कहा कि "सरकार हमारे सत्याग्रहियों को जेल में वही व्यवहार करे जो एक सरकार अपने राजनैतिक बन्दियों के साथ करती है।" अर्थात हमारे भारतीय सत्याग्रही जेलों में गये लोगों के साथ ज्यादती या अन्याय अथवा दुर्व्यवहार न करे।

९. उपरोक्त सत्याग्रह आन्दोलन में भी सत्याग्रही जेल बन्दी लोगों की संख्या जाँच के लिये कॉग्रेस कमेटी के वरिष्ठ कार्यकर्ता मौलाना हसरत मौहानी की नियुक्ति की गयी जिसमें पूरी निष्ठा पूर्वक जाँच के बाद उन्होंने अपना विवरण दिया और बताया कि "आज म. गांधी के आदेश पर देश की स्वाधीनता के लिये गोराशाही की जेलों में बन्द जो लोग कठिन कष्ट (काटते हुये) भोग रहे हैं उनमें लगभग ८० प्रतिशत आर्य समाजी विचारधारा के हैं।"

इन्हीं सब आर्य वीरों के कारण आज हैदराबाद, जम्मू एंड काश्मीर तथा गुरुदास पुर (पंजाब) की रियासत भारत संघ में मिली वरना गाँधी और नेहरु की नीति तो इस्लामिक तुष्टिकरण में ही काम कर रही थी जिसके कारण ये रियासत मुस्लिम राज में परिणत हो जाते। स्वतंत्रभारत हो जाने पर भी निजाम द्वारा हैदराबाद को एक स्वतंत्र इस्लामी राज्य घोषित कर दिये जाने पर स्थान–स्थान पर हिन्दुओं व आर्य समाजियों के साथ अनेक तरह से अत्याचार ढाहे जाने लगे तब आर्य समाजी नेता भाई बंशी लाल ने दिल्ली आकर तत्कालीन गृहमंत्री सरदार पटेल से मिलकर खुले रुप से कहा कि मिलिट्री भेजो या हमें आदेश दिया जाये, इसका इलाज हम स्वयं अपनी सेना बनाकर कर लेंगे। तब सरदार पटेल ने आश्वासन दिया कि वक्त आने पर हम कारवाही करेंगे। और ऐसा ही हुआ जब स. पटेल ने भारतीय सेना को हैदराबाद के लिये रवाना कर दिया और आर्य नेताओं को कहा कि आप सबके साहस पर विश्वास करके हम सरकारी सेना भेज रहे हैं। उधर पं. नरेन्द्र जी और आर्य वीर सब डटे हुये थे। सब के प्रयास से हैदराबाद भारत संघ में मिल गया तो मरते समय निजाम का राजा उस्मान अल्ली खाँ ने पं. नरेन्द्र जी को बुलाकर उनसे माँफी माँगी। इसी तरह आर्य समाजियों के पुरुषार्थ से गोवा को पर्तुगीज सरकार से बचाया गया। जम्मू एंड काश्मीर को पाकिस्तान में जाने से कोई नहीं रोक सकता था, अगर आर्य समाजी नेता जस्टिस मेहरचन्द महाजन तब १५ अक्तूबर, १९४७ को भारत के गृहमंत्री व उपप्रधान मंत्री स. पटेल के निवेदन पर पूर्वी पंजाब के मुख्यन्यायाधीश से हटकर काश्मीर के प्रधान मंत्री न होते।

विदित हो कि महाजन जी बाद में १९४८ से १९५३ तक भारतीय सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति तथा १९५४ के पूरे वर्ष वहाँ के मुख्यन्यायाधीश बने ।

जस्टिस मेहरचन्द महाजन पक्के आर्य समाजी थे जिन्होंने आर्य समाज के आन्दोलन के लिये लाखों रुपये इकट्ठे किये और १९३८ से १९४३ तक डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्ध कर्तृ सभा के प्रधान भी रहे । सच में ऐसे महान आर्य नेता पर हमें नाज है ।

बहुत ही स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द ने विदेशी राज्य को भारत से पूर्णतः समाप्त करने की भावना भारतीयों में भरी, इंडियन नेशनल कॉग्रेस ने देश–प्रेमी अच्छे–अच्छे नेता व कार्यकर्ता दिये, स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुलीय शिक्षा तथा स्वयं इंडियन नेशनल कॉग्रेस का मजबूत अंग बनकर साइमन कमीशन आदि विद्रोह जुलूस, शुद्धि–आन्दोलन व वैदिक शिक्षा से भारतीयों के अन्दर स्वाधीनता के लिये साहस बढ़ाया, आर्य नेता लाला लाजपत राय आदि ने सशस्त्र क्रांति को जन्म देकर स्वाधीनता संग्राम को आगे बढ़ाया जिससे आगे आने वाले आर्य वीर भगतसिंह आदि युवकों के बलिदान और इन सबकी राष्ट्रीय प्रेरणा से सम्पूर्ण आर्य जगत् ही सत्याग्रह, सम्मेलन, जेल भरो अभियान और बलिदान के सतही तथा मूल कार्यों में सबसे आगे रहा है।

प्रिय पाठक वृन्द! हमें अब भी जागने की जरुरत है। जब तक आर्य समाज आवाज उठाता रहा तब तक चारों ओर आर्य समाज का बोलबाला रहा। आर्य समाज ने हमेशा राष्ट्रीय हितों की आवाज बुलन्द की है और जब आवाज बुलन्द होती है तो सरकार भी सचेत रहती थी। फिर से हमें अपना काम बताना होगा ताकि यह बुलन्द आवाज सरकार तक पहुँचे और सरकार आर्य समाज की सहभागिता को पूरी तरह पहचान दे कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का ८० प्रतिशत हिस्सा है।

हैदराबाद सत्याग्रह व श्री कृष्ण जन्मोत्सव सम्पन्न

हैदराबाद के निजाम को आर्य समाज ने झुकाया

– स्वामी आर्यवेश

श्री कृष्ण का चरित्र योगिराज का रहा –अनिल आर्य

मंगलवार 11 अगस्त 2020, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 1939 के हैदराबाद सत्याग्रह आंदोलन के बलिदानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई व योगेश्वर श्री कृष्ण जन्मोत्सव पर ऑनलाइन उनके कार्यो को स्मरण किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि निजाम हैदराबाद के अत्याचारों से तंग आकर आर्य समाज ने उन्हें 1937 में चेतावनी दी थी, फिर कोई असर न होने पर 1939 में राष्ट्रीय स्तर पर आंदोलन शुरू किया गया। देश भर से जत्थे आने शुरू हो गए आखिरकार निजाम को झुकना पड़ा आर्य समाज के 38 सत्याग्रही शहीद हुए। भारत सरकार ने 4000 आर्यो को स्वतंत्रता सेनानी स्वीकार कर पेंशन भी दी । सरदार पटेल ने यह स्वीकार किया कि यदि आर्य समाज ने हैदराबाद सत्याग्रह न किया होता तो भारत में उसे शामिल करना कठिन होता। उन्होंने कहा कि आर्य समाज का अर्थ था विद्रोह, क्रांति और बलिदान तभी महर्षि दयानंद जी से प्रेरणा पाकर हजारो लोग स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े और अनेकों शहीद हुए,लेकिन उनका कहीं जिक्र भी नहीं होता।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि हम हैदराबाद सत्याग्रह के बलिदानियों को सदैव याद रखे, साथ ही क्रांतिकारी खुदीराम बोस के बलिदान दिवस पर याद करें। उन्होंने योगिराज श्री कृष्ण के जन्मोत्सव पर स्मरण करते हुए कहा कि वह योगेश्वर थे, उन्होंने जीवन पर्यन्त कोई बुरा काम नहीं किया। उन्होंने 12 वर्ष तक तप किया और उनकी एक ही पत्नी थी रुक्मिणी और बेटा था प्रधुम्न। राधा के साथ उनका नाम जोड़ना यह उनका चरित्र हनन और उनका अपमान है। महर्षि दयानंद जी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि इस भागवत वाले ने श्री कृष्ण के साथ बड़ा अन्याय किया है यदि यह न होता तो ऐसी श्री कृष्ण की दुर्गति न होती। योगेश्वर श्री कृष्ण के सच्चे स्वरूप को बताने व समझने की आज आवश्यकता है। सुप्रीम कोर्ट का निर्णय भी दुर्भाग्यपूर्ण व अज्ञानता का परिचायक है जिसमे उन्हें लिव इन रिलेशनशिप का उदाहरण दिया गया है यह निंदनीय है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रेम प्रकाश शर्मा (मंत्री,तपोवन आश्रम देहरादून) ने कहा कि श्री कृष्ण नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे उनपर लगाए सभी आरोप निराधार व गलत है।

प्रान्तीय महामंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि हम नयी पीढ़ी को श्री कृष्ण के सच्चे चरित्र से अवगत करवायेगे।

प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता ने कहा कि हैदराबाद स्वतन्त्रता सेनानियों के बलिदान को सदा याद रखा जायेगा।

गायक नरेन्द्र आर्य सुमन, संगीता आर्या गीत, वीना वोहरा, संध्या पाण्डेय, उर्मिला आर्य, उषा मलिक, सुलोचना आर्या आदि ने गीत सुनाये।

आचार्य महेन्द्र भाई ने धन्यवाद किया। इस अवसर पर देवेन्द्र भगत,यशोवीर आर्य,देवेन्द्र गुप्ता,विक्रम महाजन,अशोक बंसल,डॉ विपिन खेड़ा, सुरेन्द्र शास्त्री आदि उपस्थित थे।

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

भारी छूट पर उपलब्ध

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 ● दूरभाष :– 011–23274771

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना का चुनाव सम्पन्न

एवं श्रावणी उपाकर्म पर्व बड़े धूमधाम से मनाया गया। प्रातः आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के तत्वावधान में राजमोहल्ली स्थित पं. नरेन्द्र भवन में डॉ. वसुधा अरविन्द शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। इसमें सभी को नवीन यज्ञोपवीत धारण कराया गया। तत्पश्चात् भवन के सभागार में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस सभा की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में पं. धर्मपाल शास्त्री जी, श्री रामसिंह जी, भाई बंसीलाल जी के सुपुत्र श्री सदाविजय जी आर्य एवं श्री विरजानन्द जी और ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र आर्य जी, श्री दीपक कुमार जी, श्री विवेकानन्द शास्त्री जी तथा श्रीमती मधुश्री जी उपस्थित थे। इस अवसर पर आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में उपरोक्त सभी विद्वानों ने आर्य समाज के द्वारा पिछले एक शतक से किये गये गौरवपूर्ण ऐतिहासिक घटनाक्रमों का वर्णन कर सभी को प्रेरित किया। तत्पश्चात् स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सन् 1857 से अब तक आर्य समाज द्वारा चलाये गये बड़े–बड़े आन्दोलन एवं भारत की स्वतंत्रता के लिए किए गये कार्यों का वर्णन किया तथा समाज द्वारा चलाई गई सामाजिक गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी। जातिप्रथा, सतीप्रथा एवं भ्रूण हत्या के विरोध में आर्य समाज द्वारा चलाये गये पद यात्राओं के विषय में पूर्णरूप से जानकारी देते हुए लगभग एक घण्टे तक अपनी ओजस्वी वाणी से सभी को मंत्रमुग्ध किया। उसके पश्चात् सत्याग्रह में जिन वीरों ने अपने प्राण गवांए उनको सामूहिक रूप से श्रद्धांजलि दी गई। इस पूरे कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी एवं मंत्री श्री वेंकट रघुरामुलू जी तथा अन्य सभी पदाधिकारी और गणमान्य व्यक्तियों एवं सदस्यों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। शांति पाठ के पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।